सप्तमः पाठः - विचित्रः साक्षी (कथा)

1. पाठ परिचय

यह कहानी बंगाल के प्रसिद्ध लेखक **बंकिमचंद्र चटर्जी** के न्यायाधीश जीवन की एक सत्य घटना पर आधारित है। इसमें एक न्यायाधीश अपनी बुद्धि और 'एक विचित्र गवाह' के माध्यम से न्याय करता है।

2. कथा का विस्तृत सार

एक निर्धन व्यक्ति ने बहुत मेहनत से पैसे कमाए और अपने बेटे को एक कॉलेज में दाखिला दिलाया। बेटा छात्रावास (हॉस्टल) में रहता था। एक बार बेटा बीमार पड़ गया। पिता के पास बस का किराया नहीं था, इसलिए वह पैदल ही बेटे से मिलने चल पड़ा।

चोरी और झूठा आरोप: रात होने पर वह एक गाँव में किसी सज्जन के घर रुका। रात में उस घर में चोरी हो गई। शोर सुनकर अतिथि (पिता) ने चोर को पकड़ा, लेकिन वह चोर कोई और नहीं, बल्कि उस गाँव का 'सिपाही' (आरक्षी) ही था। सिपाही ने उल्टा चिल्लाना शुरू कर दिया कि "यही चोर है!" गाँव वालों ने भी सिपाही की बात मानी और अतिथि को जेल में डाल दिया गया।

न्यायाधीश की चतुराई: मामला न्यायाधीश बंकिमचंद्र के पास पहुँचा। सच्चाई जानने के लिए उन्होंने एक उपाय सोचा। उन्होंने दोनों (सिपाही और अतिथि) को आदेश दिया कि पास ही एक मृत शरीर (शव) पड़ा है, उसे उठाकर लाओ।

विचित्र गवाह: दोनों शव उठाकर ला रहे थे। रास्ते में सिपाही ने अतिथि (पिता) का मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "मैंने ही कल रात चोरी की थी, पर तूने मुझे रोक लिया। अब 3 साल की सज़ा भुगत।" जब वे न्यायालय पहुँचे, तो अचानक वह 'शव' (जो वास्तव में एक ज़िंदा आदमी था) खड़ा हो गया! उसने न्यायाधीश के सामने सिपाही की पूरी बात बता दी।

यह एक 'विचित्र गवाह' था। न्यायाधीश ने अतिथि को ससम्मान बरी कर दिया और असली चोर (सिपाही) को जेल की सज़ा सुनाई।